इकाई 7 अन्य स्वर : मेजी नीतियों का विरोध

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 तनाका शोजो : लोकतंत्र और पर्यावरण का संरक्षण करना

7.2.1 एशियो कॉपर माइन्स : आधुनिक उद्योग और प्रदूषण

7.2.2 तनाका और जन अधिकार आंदोलन

7.2.3 यानाका और एक सूबो आंदोलन

7.3 धर्मनिरपेक्ष और धार्मिकता का सेतु बंधन

7.3.1 शिन्तो तीर्थस्थलों का एकीकरण

7.4 गरीबी समाप्त करना और एक समतावादी समाज की स्थापना करना

7.5 हिसाबेस्तु बुराकू का संघर्ष : जापान के लेवलर

7.6 सांस्कृतिक जीवन में अराजकतावाद का प्रभाव

7.7 नस्लीय विज्ञान पर प्रश्न चिह्न

7.8 धार्मिक समूह और सुईहिशा

7.9 आइनू (उतारी) को जापानी बनाना

7.9.1 आइनू/उतारी द्वारा प्रतिरोध और अनुकूलन

7.9.2 मुख्य भूमि के जापानियों के लिए होकाइड़ो को खोलना

7.9.3 आइनू पत्रकारिता का उदय

7.9.4 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आइनू की स्थिति

7.10 रयूक्यू द्वीप से ओकिनावा के प्रांत को

7.11 सारांश

7.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह समझने के योग्य होंगे :

- मेजी काल की आधुनिकता के प्रभाव और मेजी काल के कुछ अधिनायकवादी विचारों के प्रति प्रतिरोध को;
- आलोचनात्मक स्वर जिन्होंने मेजी नीतियों और कार्यक्रमों का विरोध किया;
- प्रतिरोध की इस अभिव्यक्ति में तनाका शोजो और हिसाबेस्तु बुराकू के विचारों की भूमिका; और
- आइनू समूह की विकट परिस्थिति।

7.1 प्रस्तावना

मेजी सरकार की नीतियाँ ऊपर के स्तर से देश को एक औद्योगिक राष्ट्र-राज्य में बदलने के कार्यक्रम पर आधारित थी और यह यूरोपीय प्रारूपों पर आधारित एक संवैधानिक राजतंत्र

का प्रारूप था। आधुनिक होने के लिए जापान का मार्ग बिना किसी वाद-विवाद या प्रतिवाद के एक विजयी मार्च के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वास्तव में कई गरमागरम बहस के मुद्दे, विचार और नीतियाँ थीं कि देश किस दिशा में जाएगा। इस इकाई में हम इनमें से कुछ महत्वपूर्ण स्वरों पर दृष्टिपात करेंगे।

हम कुछ ऐसे व्यक्तियों पर नज़र डालेंगे जो मेजी सरकार के अधिनायकवादी नीतियों के आलोचक थे, जैसे कि तनाका शोजो (1841-1913), कोतुकू शुसूई (1871-1911) और मीनाकाता कोमागूसु (1867-1941) जिन्होंने वैकल्पिक दृष्टिकोण से अपने-अपने अलग दृष्टिकोण की पेशकश की थी।

हम देखेंगे कि जापान में परिवर्तन के लिए अल्पसंख्यकों ने कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त की। आइनू, देशी निवासी जो होकाइडो के उत्तरी द्वीप में रहते थे, ओकिनावा निवासी जिनके द्वीप मुख्य द्वीपों से अलग थे और सामाजिक रूप से बहिष्कृत समूह जिन्हें 'हिसाबत्सू बुराकू' के नाम से जाना जाता था; इन समूहों की प्रतिक्रियाएँ देखेंगे। इन विभिन्न दृष्टिकोणों से आधुनिकता के लिए जापान के मार्ग को देखने से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि देशों ने कैसे आधुनिकीकरण किया है और किस तरह से अल्पसंख्यकों और अन्य हाशिए के समूहों को नागरिक बनाया जाता है।

7.2 तनाका शोजो : लोकतंत्र और पर्यावरण का संरक्षण करना

मेजी काल में जैसे जापान का आधुनिकीकरण हो रहा था एक भूतपूर्व ग्राम प्रधान तनाका शोजो एशियों कॉपर माइन द्वारा वाटरेज और तोन नदियों के प्रदूषण को रोकने के लिए एक आंदोलन के नेता के रूप में उभरे। इस आंदोलन ने बहुत-से सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, किसानों, पत्रकारों, शिक्षकों, समाजवादियों, ईसाइयों और बौद्धों को एकजुट किया। यह क्षेत्र टोकियो के करीब था इसलिए आंदोलन को शहरी बुद्धिजीवियों का समर्थन मिला और प्रेस में इसको व्यापक रूप से पेश किया गया।

तनाका कई माइनो में उसी आलोचनात्मक परम्परा के उत्तराधिकारी हैं जिसको अंदोशोएकी ने आकार दिया था, जिनके बारे में हमने पहले की एक इकाई में देखा है कि कैसे वे लोकप्रिय परम्पराओं और नैतिक उद्देश्यों द्वारा जिसे रूप दिया गया, ऐसी सोच दोनों से विचार ग्रहण करते हैं। उनकी सोच भी ईसाई धर्म और संवैधानिकता पर आधारित थी। तनाका शोजो ने मेजी राज्य के अर्थव्यवस्था और समाज के आधुनिकीकरण के अभियान को एक प्रारम्भिक चुनौती दी क्योंकि यह एक ऐसा अभियान था जो पर्यावरणीय विनाश को जन्म दे रहा था और राजनैतिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित कर रहा था।

तनाका शोजो पहली डाइट के लिए चुने गये थे जहाँ उन्होंने लोगों को सशक्त बनाने के लिए लोकतंत्र का उपयोग करने और यह सुनिश्चित करने के लिए संवैधानिक संघर्ष किया कि सार्वजनिक नीतियाँ लोगों के हित के लिए थी। तनाका ने समुदाय और पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए बहुलवाद की एक मज़बूत भावना को जन्म देने का प्रयास किया जबकि उत्पादन की पूँजीवादी शक्तियाँ आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य को बदलने के लिए काम कर रही थी।

7.2.1 एशियो कॉपर माइन्स : आधुनिक उद्योग और प्रदूषण

एशियो कॉपर माइन्स, तोकुगावा काल से काम कर रही थी, लेकिन शुरुआती मेजी काल में ताम्बे को नई खानों की खोज और नई तकनीक की शुरुआत के साथ उनका उत्पाद उल्लेखनीय रूप से बढ़ने लगा था। इन खदानों में उस समय की सबसे नवीनतम तकनीकें इस्तेमाल की जा रही थी। 1885 तक खादानों के अवशिष्टों ने वाटरेज और तोंद नदियों में मछलियों को अपने ज़हर का शिकार बनाना शुरू कर दिया था और कुछ वर्षों के भीतर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए थे। 1890 तक, जैसे ही खेतों में ताम्बे की उपस्थिति की पुष्टि हुई, विरोध बढ़ता गया। 1896 में बाढ़ ने प्रदूषण को व्यापक क्षेत्रों में फैलाया और खदानों के कारण होने वाला प्रदूषण एक राष्ट्रीय मुद्दा बन गया।

एक तरफ मेजी सरकार खानों के मालिक फुरुकावा ईचीबी (1832-1903) का समर्थन कर रही थी। सरकार ने खानों के कामकाज की रक्षा करने की कोशिश करते हुए तर्क दिया कि वे निजी सम्पत्ति थी और सरकार उनके संचालन में हस्तक्षेप नहीं कर सकती थी। लेकिन प्रदर्शनकारियों की बढ़ती संख्या के साथ अधिकारियों ने अपना रुख बदल लिया और प्राकृतिक वातावरण का प्रबंधन करने और बाढ़ को रोकने की नीतियाँ बनानी शुरू कर दी।

जापान ने नदी प्रबंधन की परिष्कृत तकनीक विकसित की थी। नदियों के जल-प्लावन या अतिप्रवाह की अनुमति का अभ्यास था। कभी-कभी आने वाली बाढ़ को निचले स्थलों पर तटबंधों द्वारा नियंत्रित किया जाता था लेकिन अब सरकार की नीति नदी को नियंत्रित करने और किसी भी बाढ़ को रोकने के विचार पर आधारित थी। इस सोच में बदलाव ने एक बड़े बदलाव को रेखांकित किया, अब उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर प्रकृति का नियंत्रण था।

बाढ़-नियंत्रण नीति ने प्रमुख बाढ़-नियंत्रण प्रणालियों के निर्माण को जन्म दिया और जैसा कि रॉबर्ट स्टॉल्ज लिखते हैं, ''1930 में इसके पूरा होने तक जापान ने 186 रेखीय किलोमीटर उच्च जल-तटबंधों का निर्माण किया था और इसमें 220 मिलियन क्यूबिक मीटर मिट्टी का विस्थापन हुआ था– इसके विपरीत पनामा नहर ने 180 मिलियन क्यूबिक मीटर मिट्टी का विस्थापन किया।'' क्या यह नीति पर्यावरण के प्रदूषण को रोकने में कारगर थी? तनाका शोजो ने तर्क दिया कि ऐसा नहीं था, वास्तव में उन्होंने इस तथ्य को रेखांकित किया कि इसने समस्या को और अधिक बढ़ा दिया था।

7.2.2 तनाका और जन अधिकार आंदोलन

तनाका शोजो, जो एक ग्रामीण आभिजात्य पृष्ठभूमि से आए थे, नागरिक स्वतंत्रता के लिए लोकतांत्रिक आंदोलन से प्रभावित थे यानी प्रारम्भिक मेजी काल के जन अधिकार आंदोलन से। उन्होंने प्रगतिशील पार्टी (काइशिल्तो) के सदस्य के रूप में और स्थानीय समाचार-पत्र, द तोचिगी न्यूज़, के पत्रकार और संपादक के रूप में एक सक्रिय भूमिका निभाई थी। नागरिक स्वतंत्रताओं के लिए आंदोलन के रूसो और जे. एस. मिल जैसे विचारकों, पश्चिम देशों में संवैधानिक सरकार के अभ्यास के साथ-साथ किसान प्रतिरोध की लोकप्रिय परम्पराओं से प्रेरणा प्राप्त की और जापान के लिए एक संवैधानिक सरकार का तर्क दिया। इस आंदोलन में अलग-अलग संवेदनाएँ थीं लेकिन कार्यकर्ता इस बात में एकजुट थे कि उन्होंने मेजी सरकार की संवैधानिकता के विचार का विरोध किया। 1890 में तनाका शोजो ने पहले राष्ट्रीय चुनाव में डाइट में एक सीट जीती।

तनाका ने क्षेत्र और पर्यावरण के अंतरंग ज्ञान और पश्चिमी शिक्षा के अपने अध्ययन को एक साथ लाकर उन समस्याओं के बारे में सोचा जिसका सामना लोग कर रहे थे। वह कुछ प्रमुख यूरोपीय लेखकों की जानकारी रखते थे और उन्होंने रूसो के साथ-साथ क्वेकर्स के लेखन को भी पढ़ा। वह ईसाई बन गए लेकिन उन्होंने बौद्धों के साथ अपने सम्बंध बनाए रखे जिनमें से उनके अनेक आंदोलन में भी शामिल हुए। उनकी स्थानीय बैठकें आमतौर पर इलाके के बौद्ध मंदिरों में होती थी। शोजो और उनके आंदोलन जिस मूल सिद्धांत से प्रेरित हुए थे वह यह था कि लोग परिवर्तन के सक्रिय एजेंट थे और यह महसूस करने के लिए लोगों को सबसे पहले सरकार की नीतियों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए।

सरकार ने नदियों के नियंत्रण और नदी के प्रवाह को व्यवस्थित करने के आधार पर 1896 में एक नदी कानून पारित किया। तनाका ने इस काम पर अपनी आलोचना को केंद्रित किया क्योंकि उनका मानना था कि सरकारी नीतियों का आधार मौलिक रूप से गलत था। तनाका अठारहवीं शताब्दी के भौतिक ऊर्जा की शाश्वत गति के विचार से प्रेरित थे। उन्होंने तर्क दिया कि प्रकृति को गति या प्रवाह *(नगारे)* द्वारा चिह्नित किया जा सकता था लेकिन इसमें उन्होंने ''विष'' *(डोकू)* का विचार भी जोड़ा। प्राकृतिक प्रवाह को नियंत्रित करने के परिणामस्वरूप हानिकारक प्रतिवाह (Back flow *गया करयू)* होगा। धीरे-धीरे इतनी विषाक्ता जमा होगी और वापस सिस्टम में प्रवाहित होगी। एक बार एक प्राकृतिक प्रणाली में प्रवेश करने के बाद यह जहरीले पदार्थ धीरे-धीरे विघटित नहीं होंगे, बल्कि वे भीतर प्रवाहित होंगे और धीरे-धीरे पूरी प्राकृतिक प्रणाली को विषाक्त कर देंगे। आज की शब्दावली में इसे ''ईको साइड'' कहा जाएगा। अतः प्रकृति के प्रवाह को रोककर या बाधित करके प्रकृति को नियंत्रण करने की नीतियाँ अकाल और बाढ़ पैदा करने के लिए जिम्मेदार थी। नियंत्रण, प्रबंधन या अलगाव में और अलग-अलग अंशों में मुद्दों को सम्बोधित करने से समस्याओं का समाधान नहीं होगा बल्कि वे केवल स्थगित हो जाएगी। सरकार की औद्योगीकरण के बारे में केंद्रीय निर्णय लेने की योजना के मूल दृष्टिकोण को सम्बोधित करना आवश्यक था।

वाटरेज और तोंन नदियों का प्रदूषण जीव और उनके निवास स्थलों को नष्ट कर रहा था और इसने आगे चलकर चावल के खेतों को प्रदूषित कर दिया। विनाश का यह चक्र सरकार की गुमराह करने वाली तार्किक नीतियों का परिणाम था जिसने उन्हें आधुनिक विकास के रूप में उचित ठहराया।

7.2.3 यानाका और एक सूबो आंदोलन

1904 में अपने विरोध को उजागर करने के लिए तनाका शोजो यानाका गाँव चले गये जो एक जलाशय की जगह बनाने के लिए डुबोया जाना था। उन्होंने और अन्य कार्यकर्ताओं ने ज़मीन के नाममात्र टुकड़े वहाँ खरीदे और इसलिए इस आंदोलन को 'एक सूबो आंदोलन' (एक सूबो = 3.3 वर्ग मीटर) कहा गया। यानाका सरकार की नीतियों द्वारा लाई गई तबाही और इन नीतियों के प्रति जन प्रतिरोध का एक प्रतीक बन गया।

यानाका आधारित आंदोलन ने, जिसे तनाका शोजो ने *यानाका गाकू* या यानाकाओलोजी कहा, को जन्म दिया। यह ज्ञान का एक वैकल्पिक रूप था जो विष के निर्माण की बजाय प्रवाह के पोषण के तरीकों पर ध्यान केंद्रित करेगा। कार्यकर्ताओं ने जमीन के एक छोटे टुकड़े को खरीदकर राज्य के इस दावे को विफल करने की कोशिश की कि वह राष्ट्रीय हित में भूमियों पर कब्ज़ा कर सकता था। 1904-1910 के बीच यानाका के नये ग्रामीणों को सरकार द्वारा अपने गाँव के बार-बार विध्वंस के खिलाफ लड़ना पड़ा। यहाँ तक कि लोगों को राज्य के लिए युद्ध (1904-1905 का रूसी-जापानी युद्ध) के लिए सैनिकों के रूप में भेजा

गया था और अपने औपनिवेशिक साम्राज्य का निर्माण किया जा रहा था, वहीं दूसरी ओर लोगों की ज़मीनों पर कब्ज़ा किया जा रहा था और उनकी आजीविका नष्ट की जा रही थी।

तनाका की अपील शायद 1912 के उनके घोषणापत्र में अच्छी तरह से व्यक्त की गई थी जब उन्होंने लिखा था, 'हमारे पास एक संविधान है। दुर्भाग्य से यह संविधान (संकीर्ण) जापानी सिद्धांतों पर आधारित है न कि सार्वभौमिक (प्राकृतिक) सिद्धांतों (*हिरोकी केम्पो, उचुतेकी केम्पो*) पर। जैसे भले ही जापान को मरना हो, हम इसके साथ मरने के लिए बाध्य नहीं है'। शोजो के विचारों और उनके संघर्षों ने उन्हें जापान के भीतर एक शक्तिशाली और महत्वपूर्ण परम्परा में जगह दी, लेकिन उनकी सोच विश्व के अन्य हिस्सों में भी गूंजती है, जहाँ लोग इसी तरह के मुद्दों पर संघर्ष करते हैं।

तनाका शोजो के विचार और संघर्ष हमें भारत में गाँधी (1879-1948) का स्मरण कराते हैं। गाँधी ने अति महत्वपूर्ण नैतिक ढाँचे के तहत सामाजिक और राजनैतिक विकास की समस्याओं का समाधान करने की कोशिश की थी।

7.3 धर्मनिरपेक्ष और धार्मिकता का सेतु बंधन

मिनाकाता कुमागुसू जो एक प्रकृतिवादी, वनस्पतिशास्त्री, मानवशास्त्री और प्रारम्भिक पर्यावरण कार्यकर्ता थे उन्होंने लोकतंत्र और आध्यात्मिक परम्पराओं के साथ पर्यावरण के संरक्षण को जोड़ने की कोशिश की। उन्होंने पश्चिमी विज्ञान के बारे में जिसे सुरूमी काजुको ने मिनाकाता मण्डल कहा था, के माध्यम से प्रश्न खड़े किये। यह देखने का एक तरीका प्रदान करता है कि कैसे मिनाकाता ने अंतर्निर्भरता के बौद्ध विचार से ग्रहण करके, हरबर्ट स्पेंसर और पश्चिमी विज्ञान के व्यापक रूप से प्रभावशाली विकासवाद पर सवाल उठाता है और एक वैकल्पिक विश्व दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। मिनाकाता की लड़ाई शिंतो तीर्थस्थलों को एकीकृत करने की सरकारी नीतियों के खिलाफ थी, एक नीति जिसे उन्होंने *'इगोरोसी'* या 'घर की हत्या' कहा था। मिनाकाता के विचार जापान और एशिया के अतीत के विचारों पर टिके थे जो आधुनिकता की यूरोपीय परियोजना को चिह्नित करने वाले सामाजिक अलगाव और आर्थिक विनाश का मुकाबला करने का एक रास्ता खोजते हैं।

मिनाकाता कुमागुसू अपने व्यक्तिगत प्रेक्षणपथ में या अपनी बौद्धिक चिंताओं में एक सफल मेजी बौद्धिक की विशिष्ट छवि के अनुरूप नहीं हैं। मिनाकाता अपने समकालीनों से तीन महत्वपूर्ण तरीकों से अलग थे। सबसे पहले, अपने कई हम वतन लोगों की तरह, हालांकि वह अध्ययन के लिए विदेश गए थे, लेकिन एक डिग्री प्राप्त करना उनके लिए कभी भी महत्वपूर्ण नहीं था। ज्ञान की खोज ही उनका जीवन पर्यंत सरोकार था। वह अमेरिका में छः साल तक रहे और उस दौरान उन्होंने वेस्टइंडीज़ और क्यूबा, वेनेजुएला, हायती और पनामा की यात्रा की। उन्होंने इंग्लैंड में आठ साल बिताए और एक प्रतिष्ठित विज्ञान की पत्रिका में एक लेख ''सुदूर पूर्व में नक्षत्र'' के साथ अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। इंग्लैंड में वह सन यात्सेन जैसे प्रभावशाली बुद्धिजीवियों के मित्र बन गये, जो 1911 की गणतंत्र क्रांति के बाद चीन के प्रधानमंत्री बने थे।

एक वैज्ञानिक और एक तुलनात्मक लोक कथाकार के रूप में उनके लेखन ने उन्हें अंग्रेज़ी भाषी बौद्धिक जगत के भीतर पहचान दिलाई। उनकी बड़ी लाइब्रेरी में विज्ञान, पुरातत्व, लोककथाओं, धर्म और इतिहास पर किताबें थी और उनमें से कई भाषाओं में टिप्पणियाँ थी। अंग्रेज़ी बोलने वाले अधिकांश बुद्धिजीवियों में उनके पुस्तकालय की पुस्तकों से परिचित रहे होंगे। वह न केवल अंग्रेज़ बुद्धिजीवियों के साथ, बल्कि भारत, चीन व अन्य औपनिवेशिक दुनिया के भागों के राष्ट्रवादियों और क्रांतिकारी निर्वासितों के साथ भी सम्पर्क में आए जो

लंदन में एकत्र थे। इस प्रकार मिनाकाता की सोच जापान के अंदर के सरोकारों और विवादों से ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लोगों के साथ उनके पारस्परिक प्रभाव के जरिए बनी। यह कुछ ऐसा रुझान था जिसे उन्होंने अनेक उपनिवेशवाद विरोधी बुद्धिजीवियों के साथ साझा किया।

दूसरा, मिनाकाता अपने कई प्रसिद्ध समकालीनों से इस रूप में भिन्न थे कि उनका जीवन 'दुनिया में उन्नति' (*रिशिन शुसेइ*) के विचार से प्रेरित नहीं था। मेजी जापान में 'सांसारिक सफलता' को महत्वपूर्ण बनाकर चिह्नित किया गया था। इसका मतलब था सही डिग्री प्राप्त करना, नौकरशाही या उद्योग में करियर बनाना और 'एक मज़बूत सेना वाले एक समृद्ध देश' (*फुकोकु क्योहि*) के रूप में जापान के बनाने में योगदान करना।

मिनाकाता एक प्रशिक्षित वैज्ञानिक थे जिन्होंने एक प्रकृतिवादी के रूप में माइसेटेजोवा (नेनकिन) की खोज में काम किया था, लेकिन वे विज्ञान, धर्म और पर्यावरण के बारे में विचारों को एक बौद्धिक प्रणाली में एकीकृत करना चाहते थे। उन्होंने आधुनिक पश्चिमी प्रणालियों को अपने द्वारा उठाए गये सवालों का सामना करने में असमर्थ पाया था। उनकी बौद्धिक परियोजना इस प्रकार व्यापक और अपने उद्देश्यों में अधिक क्रांतिकारी थी जो उनके कई समकालीन लोग थे, उनसे बिल्कुल भिन्न।

तीसरा, वह अपने कई अकादमिक समकालीनों से भी अलग थे, हालांकि वह एक राजनैतिक कार्यकर्ता नहीं थे, लेकिन उन्हें एक सार्वजनिक बौद्धिक व्यक्ति कहा जा सकता था जो उन महत्वपूर्ण मुद्दों पर एक निश्चित निर्णय लेते थे। तीर्थस्थलों के एकीकरण पर उनका एक लेख इसका एक उदाहरण है। मिनाकाता के व्यावसायिक करियर और सामाजिक सक्रियता को एक बड़े औपनिवेशिक बौद्धिक नेटवर्क के ढाँचे के भीतर देखा जाना चाहिए जिन्होंने पश्चिमी अकादमिक परिचय-पत्र प्राप्त किये, लेकिन अपनी स्वयं की और अन्य परम्पराओं को अस्वीकार नहीं किया। व्यावसायिक कौशल पर उनके नियंत्रण ने उन्हें पहुँच और मान्यता दी, लेकिन वे एक ही समय में इस दुनिया के हाशिए पर और उसकी बहुत-सी मान्यताओं के साथ तनाव में थे। इस बहिष्करण ने उन्हें प्रचलित मान्यताओं पर सवाल उठाने और वैकल्पिक प्रणालियों को मुखरित करने के तरीकों के बारे में सोचने की अनुमति दी।

आधुनिकता ने जो विघटन पैदा किया था मिनाकाता उसे फिर से जोड़ना चाहते थे। धर्मनिरपेक्ष और धार्मिकता के बीच विभाजन, यह विचार की तर्कसंगतता का अर्थ था आध्यात्मिकता को नकारना, राज्य का जीवन के सभी पहलुओं में हस्तक्षेप करके समुदायों और पर्यावरण को नष्ट करना। उन्होंने इस पर सवाल उठाया कि जापान को पश्चिम के साथ कदम मिलाना था जैसा उस समय इस अभियान की विशेषता थी। कुमागुसू ने इन उद्देश्यों और मान्यताओं पर सवाल उठाया क्योंकि वे राज्य के मिथकों का विरोध करने पर आधारित थे, ऐसे आधुनिक मिथक जिन्होंने लोगों में भ्रम पैदा किया और अलोचनात्मक शक्ति को कमजोर किया।

7.3.1 शिंतों तीर्थस्थलों का एकीकरण

मेजी सरकार आधुनिक होने के नाते जो आत्मधारणा बना रही थी उसने जापान की बौद्धिक जीवन की ऐसी छवि पेश की जिसमें धर्म हाशिए पर था और शिंतों धर्म 'राज्य की एक प्रथा', जो शाही घराने और जापानी परम्पराओं से जुड़ा था।

इस एजेंडे को आगे बढ़ाने में सरकार ने बौद्ध धर्म पर एक विदेशी धर्म के रूप में हमला किया और यहाँ तक कि मंदिरों को भी नष्ट किया। उन्होंने शिन्तो को जापान के मूल धर्म

के रूप में देखा, एक विचार जो वास्तव में एक आधुनिक विचार था। शिंतो पुजारियों ने इस विचार का स्वागत किया क्योंकि उन्हें राज्य द्वारा वेतन दिए गए थे और उनकी स्थिति में बहुत सुधार हुआ था। 1906 में सभी शिंतो तीर्थों का श्रेणीकरण किया गया। लसे (Lse) तीर्थ को पदानुक्रम में शीर्ष पर रखा गया था क्योंकि यहाँ सम्राट अपने पूर्वजों की पूजा करते थे। तर्कसंगतता और प्रबंधन के हितों में सरकार ने आदेश जारी किया कि प्रत्येक गाँव में केवल एक ही मंदिर होना चाहिए। इसका अर्थ था कि अनेक अचिह्नित या छोटे मंदिरों को नष्ट कर दिया गया और वहाँ की देव प्रतिमा को अधिकारिक रूप से समर्थित तीर्थस्थल में भेज दिया गया। सभी तीर्थस्थल एक पवित्र उपवन से घिरे थे। एक बार तीर्थस्थल को हटा देने के बाद पेड़ों को काटा और बेचा जा सकता था। यह विनाश वाकायामा और निकटवर्ती मेई में सबसे व्यापक था जहाँ मिनाकाता रहते थे।

इस नीति पर मिनाकाता का हमला व्यापक और महान बौद्धिक गंभीरता से चिह्नित था। उन्होंने तर्क दिया कि यह नीति तीर्थ स्थलों के आसपास पवित्र वनों के दोहन और पर्यावरण विनाश का कारण बनेगी। जापान जिन युद्धों में लड़ रहा था और आर्थिक विकास के कारण लकड़ी की माँग बढ़ गई थी और वाकायामा एक प्रमुख इमारती लकड़ी का उत्पादक क्षेत्र था इसलिए इस नीति के आर्थिक कारण थे।

लेकिन मिनाकाता ने यह भी तर्क दिया कि टोकियो में नौकरशाहों द्वारा तय की गई इन नीतियों से शक्ति और निर्णय लेने के अधिकारों का केंद्रीयकरण हो रहा था और क्षेत्रीय और स्थानीय सरकारों की सत्ता कम हो रही थी। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि तीर्थस्थल चाहे छोटे हो या बड़े वे सिर्फ भवन नहीं थे बल्कि उनका धार्मिक भावनाओं के साथ एक जैविक सम्बंध था और इन 'ओपन एयर म्यूजियम' *(यागई हकुबुत्सुकन)* के माध्यम से लोग अपने अतीत और अपनी परम्पराओं से जुड़े हुए थे। इन पुण्य स्थलों को नष्ट करना वास्तव में *आइगोरोशी* या अधिवास को मारने जैसा था जिसको अतीत के साथ अपने सम्बंधों को काट कर अपने घर को मारने के रूप में समझा जा सकता था।

मिनाकाता ने पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लम्बे समय तक अभियान चलाया था, वे जापान के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने परिस्थितिकी (Ecology) शब्द का उपयोग किया था लेकिन पर्यावरण संरक्षण बारे में उनकी सोच लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के साथ अनिवार्य रूप से जुड़ी हुई थी और यह तभी हो सकता था जब लोग स्वयं अपने भविष्य के निर्माता होते। उन्होंने पर्यावरण और समुदाय के संरक्षण को एक संकीर्ण राष्ट्रीय ढाँचे में नहीं बल्कि एक वैश्विक मुद्दे के रूप में देखा।

7.4 गरीबी समाप्त करना और एक समतावादी समाज की स्थापना करना

समाजवादी विचार यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका से जापान आए थे। अमेरिका इनका एक प्रमुख स्रोत था। 1880 के दशक में अमेरिकी समाजवाद सामाजिक कल्याण से आगे बढ़कर आर.टी. ईली के वैज्ञानिक समाजवाद और बढ़ गया था और 1886 में अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर (AFL) एक प्रभावशाली शक्ति बन गया और अनेक जापानी लोग जो अध्ययन के लिए अमेरिका गये उनकी सोच को इसने प्रभावित किया।

सामाजिक समस्याओं के बारे में जापानी सोच गरीबी के सवाल और आर्थिक असमानता के उन्मूलन से संबंधित थी। इन सवालों का अध्ययन करने के लिए 1896 में सोशल पॉलिसी स्टडी ग्रुप *(शाकाई साई-साकु गक्काई)* की स्थापना की गई थी। अन्य समूहों ने इसका अनुसरण किया।

कई समाजवादियों ने मेजी पुनर्स्थापना को *'ईशिन-काकुमेई'* या पुनर्स्थापना क्रांति के रूप में देखा। उन्होंने इसे प्रगतिशील क्रांति के रूप में देखा जिसने सामंतवाद को उखाड़ फेंककर स्वतंत्रता और समानता की स्थापना की। इस प्रकार अराजक-सिंडिकेलिस्ट कोतोकु सुसुई ने लिखा, ''हमारे जापान की पुनर्स्थापना क्रांति में वास्तव में स्वतंत्रता, समानता और परोपकार की भावना है।''

ईशिन का चरित्र उनके लिए शाही पुनर्स्थापना में नहीं था और न ही पश्चिमी व्यापार के लिए जापान के द्वारा खुल जाने में, बल्कि यह उन्नीसवीं शताब्दी के स्वतंत्रता और लोकप्रिय सरकार के उदार विचारों के प्रभाव में निहित था, जिन्होंने एक संवैधानिक सरकार की स्थापना की इसलिए, जब उन्होंने प्रतिरोध और परिवर्तन की बात की, तो यह *ईशिन* के वास्तविक उद्देश्यों की पुनर्स्थापना करना और उसमें आ गई विकृतियों को समाप्त करना था।

इस अवधि की दो सबसे अधिक प्रतिनिधि समाजवादी रचनाएँ दोनों ही 1903 में लिखी गई थी। वे कोतोकु शुसुई की द क्वेंट एसेंस ऑफ सोशलिज़्म (*शाकाई शुगी शिनजुई*) और कातायाम सेन की (1859-1933) *अवर सोशलिज़्म* (वागा शाकाईशुगी) थी। कोतोकु शुसुई की रचना, हालांकि काफी हद तक ऐली, मार्क्स और *एंजेल्स* के लेखन पर आधारित है लेकिन मोरिचिका उनपेई के *सोशलिस्ट प्रोग्राम* (*शरकाई शुगी कोरियो*) के साथ-साथ एक अग्रणी प्रयास था। यह समाजवादी विचारों की एक अच्छी समझ को दर्शाता है। कोतोकु की वर्ग संघर्ष की अवधारणा को एक विकासवादी अवधारणा और सर्वश्रेष्ठ के योग्य के होने के रूप में कम नहीं किया जा सकता। वह समाज को प्रगति होते हुए रूप में (*शिन्का*) के रूप में देखता है और वर्ग वर्चस्व का उनका विश्लेषण आर्थिक और नैतिक दोनों दृष्टि से है। कातायामा सेन की रचना, *अवर सोशलिज़्म* थोड़ी लम्बी रचना है, जो समाजवाद के अर्थ को परिभाषित करने से शुरू होती है और फिर पूँजीवादी समाज के विश्लेषण की दिशा में बढ़ती है और श्रमिकों के दृष्टिकोण से उस समाज की आलोचना पेश करती है। कातायामा समाजवादी क्रांति का अर्थ बताते हैं और तर्क देते हैं कि पूँजीवादी दौलत को बिना मुआवजे के ज़ब्त कर लिया जाएगा क्योंकि यह पूँजीपतियों की नहीं है बल्कि श्रमिकों द्वारा ही उत्पादित की जाती है।

मेजी समाजवाद में यह आर्थिक संगठन का मौलिक सिद्धांत था जिसे समाजवाद समझा जाता था। राजनीति, हालांकि सिर्फ एक सशर्त तत्व (*जोकेनतेकि*) नहीं थी बल्कि यह बदलाव लाने के लिए एक महत्वपूर्ण तरीका था। समाजवादियों ने अपने आदर्शों को साकार करने के लिए राजनैतिक प्रणाली के महत्व को पहचाना।

चुनाव प्रणाली पर कोतोकू के लेखन से इस समझ का संकेत मिलता है और यह अवधि की प्रमुख विशेषताओं को चिह्नित करने के लिए श्रेणियों और चरणों का उनका उपयोग स्वीकार किए गये ढाँचे का एक हिस्सा था जिसमें इतिहास 'मुक्त प्रतियोगिता' की अवधि से 'ट्रस्ट और सिंडिकेट्स' (*शिहिंगोडो शुगी*) से होकर अंततः विश्व समाजवाद तक जाना था।

मेजी समाजवाद में 'जन' की समझ एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। तोकुतोमी शोहो (1863-1957), जिन्होंने 'सामान्यतयावाद' (*हेमिंशुगी*) के विचार की अवधारणा दी, इसमें उन लोगों को संदर्भित किया जो साधारण 'जन' *हेमिग* थे, कुलीन वर्ग या समुराई नहीं। कोतोकू की समझ में इस समूह के केंद्र ने जन का गठन किया। इसमें वे लोग शामिल थे जिनके पास ज़मीन थी और जो वोट कर सकते थे।

सदी के अंत तक अधिकांश समाजवादियों की समाजवाद के सार तत्व पर सहमति हुई। उनके विचार–क) उत्पादन सुविधाओं के सार्वजनिक स्वामित्व पर, ख) समान वितरण पर

आधारित थे। इन परिवर्तनों को लाने के लिए उन्होंने तर्क दिया कि जापान के विकास के स्तर को देखते हुए हिंसा अनावश्यक थी। इन परिवर्तनों को संसदीय संस्थाओं के माध्यम से शांतिपूर्वक लाया जा सकता था और इसलिए उन्होंने एक सार्वभौमिक मताधिकार कानून का समर्थन किया, जो उन्होंने तर्क दिया, उन्हें सत्ता जीतने में सक्षम बनाएगा। इसलिए वे सामान्य शिक्षा के भी सक्रिय समर्थक थे जो श्रमिकों और काश्तकारों के मध्य, जो आबादी का बड़ा हिस्सा थे, जागरूकता पैदा करेगी।

बोध प्रश्न 1

1) तनाका शोजो के पर्यावरण संरक्षण की दिशा में उठाए गये कदमों की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2) संक्षेप में मिनाकाता कुमागुसु के विचारों को वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

7.5 हिसाबेस्तु बुराकू का संघर्ष : जापान के लेवलर

सामाजिक रूप से बहिष्कृत समूहों को मेजी पुनर्स्थापना के बाद, *'बराकुमिन'* के नाम से जाना जाता था क्योंकि वह पहले नामित गाँव, 'तोक्सु बुराकू' में रहते थे एक शब्द जिसका अब उपयोग नहीं किया जाता। आज जिस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है वो है, *'हिसाबेस्तु बुराकू'* या भेदभाव वाले समुदाय या *घेटोज*। 1871 में एक आदेश ने अकुलीन वर्गों को समाप्त कर दिया। आज इसे मुक्ति आदेश (इमेंसीपेशन एडिक्ट) के नाम से जाना जाता है। मेजी काल और बाद के समय में इस भेदभाव को समाज करने के लिए आंदोलन को दो शिविरों में विभाजित किया गया था। एक जो उनके समावेश (*युवा*) की वकालत करता था और दूसरा जो इन प्रथाओं का आलोचक था और मुक्ति की माँग करता था।

1905 में जापानी सरकार ने *हिसाबेस्तु बुराकू* के लिए सुधार परियोजना का प्रायोजन किया, इस वैचारिक अभियान को युवा (समरसता) आंदोलन कहा गया। युवा, सुलह के विचार पर आधारित था और सम्राट की सत्ता के अंतर्गत अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों में विलय करने की माँग करता था। इसका स्थान लोकप्रिय आंदोलनों ने ले लिया जो सरकार के ज्यादा आलोचक थे। सरकार ने 1942 में एशिया प्रशांत युद्ध की शुरुआत तक युवा आंदोलन का समर्थन किया।

युवा आंदोलन के सीधे विरोध में *सुईहिशा* (लेवलर, 17वीं शताब्दी का अंग्रेज़ी आंदोलन जो लोकप्रिय सम्प्रभुता, सार्वजनिक मताधिकार और धार्मिक सहिष्णुता के लिए लड़ा गया) स्वतंत्र रूप से *हिसाबेस्तु बुराकू* लोगों द्वारा संगठित किया गया था। गौरतलब है कि इसने

अंग्रेज़ी लेवलर से अपना नाम लेते हुए सार्वजनिक एजेंडे की अपील का सुझाव दिया जो राष्ट्रवाद से बंधा हुआ नहीं था। *सुईहिशा* ने 3 मार्च 1922 को एक घोषणा जारी की जिसमें मानवता की पुनर्स्थापना का आह्वान किया गया था। इसने घोषणा की कि उनके कलंक को उखाड़ फेंकने का समय आ गया है जिसने सदियों से उन्हें बांधा हुआ था। घोषणा में कहा गया था कि शहीदों के मुकुट का आशीर्वाद लेने के लिए बुराकू का समय आ गया था जिसमें मुक्ति का प्रकाश फैलाना था। आंदोलन के संस्थापकों में से एक, मनकिचि साइको ने (1895-1970) प्रकाश और तापमान के तुलनात्मक रूपक का उपयोग करते हुए लिखा – 'अलगाव और उत्पीड़न का ठंडा दुःस्वप्न जिसके शिकार बुराकू रहे थे, अब बुराकू को गर्मी और प्रकाश की तरफ ले जाएगा, मुक्ति जो मज़दूर वर्ग और काश्तकारों के लिए लाएगा। उन्होंने लिखा मानव समाज के लिए गर्मजोशी होनी चाहिए; सभी मनुष्यों के लिए प्रकाश हो।'

सुईहिशा एक आधुनिक संगठन था जो *हिशाबेस्तु बुराकूमिन* के अधिकारों के लिए लड़ने के लिए स्थापित किया गया था, जिन्हें हालांकि सिद्धांत रूप में समानता दी गई थी लेकिन व्यवहार में जिनसे भेदभाव किया जाता था। घोषणा की भाषा और शहादत का विचार ईसाई मान्यताओं के प्रभाव को दर्शाता है।

यह अराजकतावाद से भी काफी प्रभावित था। दो विद्वान जिन्होंने इसकी जाँच की है मियाजाकि और मिहारा, इस तथ्य को सामने लाते हैं कि *सुईहिशा* में अराजकतावाद का बड़ा प्रभाव था और 1942 में युद्ध के फैलने तक इसने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आंदोलन के विचार में इसका एक आर्थिक आधार था यानी पूँजीपति या अमीर से छीनना (*रयाकू*)। आंदोलन में अराजकतावाद के अन्य विशिष्ट पहलू उनके सामुदायिक जीवन के अभ्यास और एकजुटता की उनकी मज़बूत भावना द्वारा व्यक्त किया गया था (*निनक्यो*) की भावना। ये विचार उन्हें उस समय के धार्मिक समूहों से भी जोड़ते थे।

7.6 सांस्कृतिक जीवन में अराजकतावाद का प्रभाव

अराजकतावाद ने, जिस प्रकार जापान में इसकी पुनर्व्याख्या की गई, आधुनिक जापान में सांस्कृतिक जीवन की मूल धारणाओं को आकार देने में काफी प्रभाव डाला। जापान में, शोकोनिशि के अनुसार अराजकतावाद को *बाकूनिनवादी हिसंक* विनाश की विचारधारा से नये रूप में डाला गया ताकि एक ऐसी सभ्यता विकसित की जा सके जो पारस्परिक सहायता के विचार पर आधारित हो।

यह सहकारितावादी प्रगति की दृष्टि आधुनिक जापान के सांस्कृतिक जीवन के वैचारिक आधार के लिए एक बहुत शक्तिशाली संरचना बन गई। इसने टोकियो इम्पीरियल यूनिवर्सिटी के छात्रों द्वारा स्थापित द न्यू मेन सोसाइटी (*शिंजिनकाई*) जैसे बौद्धिक आंदोलनों के लिए आधार प्रदान किया ताकि लोकतंत्र को लोगों के पास जाकर (*जिनमिन नोनाके*) स्थापित किया जा सके। इन विचारों ने *सुईहिशा* को भी प्रभावित किया।

मनकिची साइको, *सुईहिशा* के संस्थापकों में से एक, मार्क्स और एंगेल्स से प्रभावित था और साथ ही साथ रूसी उग्र विचारकों जैसे करोप्टोकिन, बाकुनिन, लेखक मेक्सिम गोर्की, साथ ही साथ रोमो रोंला जैसे फ्रांसीसी मानवतावादियों से भी प्रभावित थे। उन्होंने कौतुकू शुसुई, ओसुकि साके, यामाकावा हितोशी, सानो मनाबू और अन्य जापानी साम्यवादियों को पढ़ा। वह अपने समय के प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों से परिचित थे।

रूसी साहित्य के विद्वानों ने *सुईहिशा* के मानवता के विचार पर रूसी लेखन से होने वाले प्रभावों की ओर संकेत किया है। गयोफू सोमा (1883-1950), रूसी साहित्य के कवि और

अनुवादक गोर्की के उपन्यासों के बारे में, विशेष रूप से द *लॉअर डेप्थ* (1902) के बारे में लिखते हुए तर्क देते हैं कि मानव गरिमा का महत्व बहुत महत्वपूर्ण है जैसा कि वे अपने आवारा और पूर्व अपराधी जैसे निम्न वर्ग के लोगों के विवरणों में दिखाते हैं और यह जापानी पाठकों को समझ में आया।

यह संगठन में दूसरों के लिए भी सच था। कोन्डो हिकारि (1887-1961), कातायामा सेन के एक सहयोगी, शुरुआती समाजवादियों में से एक, जिन्होंने 1918 में इरकुत्सक में लेबर यूनियनों को संगठित करने के लिए कदम उठाए और प्रावदा के संवाददाता बन गये। वह सुईहिशा के गठन के बाद इसमें शामिल होने के लिए तुरंत वापिस आ गये। *सुईहिशा* के गठन की अवधि में क्योतो क्षेत्र में बहुत से अनुयायी थे जिसमें *हिसाबेत्सु बुराकू* की आबादी अधिक थी।

7.7 नस्लीय विज्ञान पर प्रश्न चिह्न

इन उग्र विचारों का उपयोग सवाल उठाने के लिए किया गया और नस्लीय विज्ञान को भी जापान में लोकप्रिय बनाया गया। 1920 के दशक में, यूरोपीय 'नस्लीय विज्ञान', जैसे कि आनुवंशिक और आपराधिक मानव विज्ञान, जो तर्क देते थे कि प्रत्येक नस्ल में कुछ अंतर्निहित लक्षण मौजूद थे, जापान में बहुत व्यापक रूप से स्वीकार किये जाते थे। बहुत से लोग सोचने लगे कि गरीब लोग आवारा, अपराधी, दिव्यांग और बुराकूमिन 'निम्न' श्रेणी के मानव थे। नस्लवादी विरोधी भावनाओं की अपील और अराजकतावाद में मानव जीवन का निरपेक्ष मूल्य, इन्होंने घोषणा को समाज से करुणा की माँग के लिए नहीं बल्कि मानव गरिका प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

7.8 धार्मिक समूह और सुईहिशा

सुईहिशा ने अन्य आंदोलनों के साथ काम किया जो मंदिरों के भीतर भेदभाव को समाप्त करने की माँग कर रहे थे। बौद्ध संप्रदाय भी सामाजिक पदानुक्रम का पालन करते थे और बहिष्कृत पुजारी अपने मंदिरों तक ही सीमित थे। चुपचाप भेदभाव सहने का विरोध बढ़ता जा रहा था और भिक्षुओं ने अपनी दुर्दशा का जवाब खोजने के लिए न्यायपालिका का रुख किया। उन्होंने अधिक प्रत्यक्ष कार्यवाही भी की। 1881 में बुराकू विश्वास करने वालों ने एक प्रमुख पुजारी को उसके भेदभाव पूर्ण रवैये के लिए अदालत में तलब किया। 1902 में एक होंगंजी पुजारी रयुगे की भेदभावपूर्ण टिप्पणी ने आधुनिक काल की शुरुआत के बाद से सबसे बड़ा बुराकू प्रदर्शन खड़ा किया।

सुईहिशा से जुड़े अनेक कार्यकर्ता शिन बौद्ध सम्प्रदायों के सदस्य थे जिनके देशभर में अनुयायी थे। होंगन्जी और बुराकू कार्यकर्त्ताओं के बीच के सम्बंधों को नारा प्रांत में निशिकोजी मंदिर के नाकामुरा परिवार की तीन पीढ़ियों में अच्छी तरह से चित्रित किया गया है। नाकामुरा तिशि एक भिक्षुक ने भेदभाव के खिलाफ लड़ाई की, उनके बेटे को अधिकारिक सिद्धांत के खिलाफ जाने वाली एक किताब के कारण संप्रदाय से निकाल दिया गया था और फिर उनके पोते नाकामुरा जिन्या ने भेदभाव के खिलाफ इस लड़ाई को आगे बढ़ाया और *सुईहिशा* की स्थापना में मदद की। वह आल जापान सुईहिशा यूथ एलांयस में भी महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। मंदिर के अंदर संघर्ष और सुईहिशा के बीच में बहुत करीब के सम्बंध थे।

7.9 आइनू (उतारी) को जापानी बनाना

मेजी सरकार ने पुनर्स्थापना के बाद ऐजो (एजोची) की भूमियों पर नियंत्रण स्थापित किया और 1869 में इसे होकाइड़ो (उत्तरी सागर सक्रिट, शास्त्रीय काल में प्रयुक्त शब्दावली के आधार पर एक नाम) का नाम दिया। सरकार रूस के बारे में चिंतित थी और यहाँ अपना स्पष्ट नियंत्रण स्थापित करना चाहती थी। रूसी अभियान इस क्षेत्र की खोज कर रहे थे और इन द्वीपों को उपनिवेश बनाना चाह रहे थे।

जापानी आइनू को जापान के मूल निवासी माना जाता है। उनकी भाषा, पोशाक और संस्कृति अलग है और कुछ विद्वानों के अनुसार उनकी उत्पत्ति जोमोन संस्कृति से हुई है। पूर्व आधुनिक काल में जापान की मुख्य भूमि के शासन के खिलाफ विद्रोह हुए थे लेकिन उन्होंने अपनी संस्कृति और जीवन में एक हद तक स्वायत्तता का आनंद उठाया।

आइनू नाम का अर्थ है 'मानव', पर यह शब्द अपनी अपमानजनक बारीकियों के कारण समस्या मूलक रहा है। और वे स्वयं को उतारी (आइनू भाषा में साथी) के रूप में पहचानना पसंद करते हैं। आधिकारिक दस्तावेज दोनों नामों का उपयोग करते हैं। आइनू होकाइड़ो, कुरील द्वीपों, सखालिन और मुख्य द्वीप के उत्तरी होंशु के कुछ हिस्सों में रहते थे। उन्होंने अपनी भूमि को आइनू मोसिर नाम दिया।

मेजी सरकार के सभ्यता मिशन का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से आइनू को आधुनिक शाही नागरिकों में परिवर्तित करना था या उन्हें अपनी पहचान छोड़ने के लिए प्रशिक्षित करना। हालांकि ऐसे कानूनी विनियमन के कानून निर्मित किये गये जो उनकी पृथकता को चिह्नित करते रहे। आधुनिक बनने के लिए उन्हें अपनी परम्परा का त्याग करना था। विडंबना यह है कि जापानी आधुनिकता का प्रमुख मूल मंत्र 'परम्परा' और 'आधुनिकता' के बीच संतुलन है।

सरकार का प्रारंभिक जोर दोहरा था, ईजो, जिसका नाम बदलकर होकाइड़ो किया गया, को 'मुख्य भूमि' के लोगों से आबाद और उपनिवेशित करना और उनका बलपूर्वक आत्मसात् कराना। इसका मतलब यह था कि मुख्य भूमि से लाए निवासियों को खाली स्थानों को आबाद करके उन्हें भूमि के बड़े भू-भाग प्रदान किये गये। आइनू को जापानी भाषा का उपयोग करने जापानी नाम अपनाने पर मज़बूर किया गया उनकी और टेटू जैसी पारम्परिक प्रथाओं को निषिद्ध किया गया। आइनू लोगों ने अपनी भूमि और अपना इतिहास खो दिया। इस राजनैतिक प्रक्रिया में वे एक इतिहास परे के समुदाय में तबदील हो गये। उस राजनीति ने जिसने उन्हें अपनी परम्पराओं के माध्यम से एक समुदाय के रूप में परिभाषित किया, उनके साथ सदा के लिए भेदभाव बना दिया। इस भेदभाव को समाप्त करने के लिए जो आवश्यक था वह आधुनिकता की राजनीति द्वारा परिभाषित एक अनिवार्य आइनू पहचान का 'संरक्षण' नहीं था बल्कि आधुनिक जापानी राज्य और उसके द्वारा निर्मित राजनीति पर प्रश्न चिह्न लगाना था।

7.9.1 आइनू/उतारी द्वारा प्रतिरोध और अनुकूलन

प्रतिरोध और संयोजन ने कई रूप धारण किये। तीन क्षेत्र आइनू के वैकल्पिक इतिहास की सीमाओं को चिह्नित करते हैं। एक जबरन भूमि अधिग्रहण का प्रतिरोध, दूसरा अपने अतीत को पुनः प्राप्त करना और तीसरा अपने हितों और सरोकारों को स्पष्ट करने के लिए समूहों का गठन। इन सामाजिक, राजनैतिक और बौद्धिक संघर्षों के माध्यम से आइनू आधुनिक भी हो रहे थे। जबकि जापानी राज्य ने जापान की प्रबुद्ध आधुनिकता को चिह्नित करने के लिए उन्हें पूर्व आधुनिक समुदाय के रूप में रखने का काम किया था।

7.9.2 मुख्य भूमि के जापानियों के लिए होकाइड़ों को खोलना

मेजी अवधि ने आइनू के बलपूर्वक पुनर्वास को देखा क्योंकि उनकी भूमि को मुख्य भूमिवासियों या वाजिन (यानी यामातो के लोग) कहे जाने वाले लोगों के लिए उपनिवेश के रूप में खोला गया था। होकाइड़ो की आइनू की आबादी 18000 के आसपास स्थिर हो गई थी लेकिन 1850 और 1913 के बीच मुख्य भूमि से आए जापानियों की आबादी एक लाख ग्यारह हजार से 1.8 मिलियन हो गयी।

मुख्य द्वीपों से आने वाले लोगों को आइनू 'शमो' के नाम से जानते थे। इससे कब्ज़े के अधिकार पर लड़ाई हुई। अगर एक उदाहरण दिया जाए तो 1891 में नदी के किनारों और असाहिकावा में झीलों के इर्द-गिर्द रहने वाले आइनू लोगों को होकाइड़ों प्रशासन द्वारा जबरन चिकाबूमि के उत्तर-पश्चिम में भेज दिया गया था। जहाँ सरकार ने 10 लाख 50 हजार सुबो (लगभग 3.3 वर्ग मीटर भूमि की माप = एक सूबो) भूमि उनकी आवश्यकताओं के लिए आरक्षित की थी। लेकिन 1894 में इसमें से केवल 46 हजार सुबो को 36 आइनू परिवारों को दिया गया था।

इस भूमि के उपयोग के अधिकार को मान्यता देते हुए होकाइड़ो सरकार ने उनके कब्ज़े के अधिकार को मान्यता नहीं दी। 1899 में देशी संरक्षण कानून लागू हुआ क्योंकि यह तय किया गया था कि सेना के सातवें डिवीज़न को इन भूमियों में लाया जाएगा। होकाइड़ो सरकार ने इस भूमि को कानून के दायरे से बाहर कर दिया और आइनू को दिए जाने वाले अनुदान बंद कर दिये। अंततः 1900 में ओकुरा जेनहाचिरो, जिसने सातवें डिवीज़न के लिए भवनों का निर्माण करने वाले ओकुरा जायबेत्सु का गठन किया, ने एक नकली सील का इस्तेमाल करके निरक्षर आइनू लोगों की आँखों में धूल झोंककर उनसे स्वयं के अधिकारों से वंचित करने वाले दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करवा लिए। प्रशासन उनकी बात का समर्थन किया कि आइनू ने स्वयं अपने अधिकार को छोड़ने पर हस्ताक्षर किए थे। आइनू लोगों के अधिकारों के बचाव के एक आइनू समूह का गठन किया गया था लेकिन 1913 तक बिक्री को रद्द नहीं किया गया और तभी असाहिकावा शहर मुआवजे का भुगतान करने के लिए सहमत हुआ।

7.9.3 आइनू पत्रकारिता का उदय

सार्वजनिक शिक्षा के प्रसार की सरकार की नीति ने साक्षरता के विकास और पढ़ने-लिखने वाली जनता के विकास में मदद की। कई आइनू लोगों ने अपनी समस्याओं की चेतना बढ़ाने के लिए पत्रकारिता की ओर रुख किया। ताइशो काल (1912-1926) में आइनू पत्रकारिता का विकास शुरू हुआ। 1913 में यामाबे यासूनोसुके (1867-1923) ने आत्मजीवनी परक 'द स्टोरी ऑफ आइनू' (आइनू मोनोगतारी), आइनू भाषा में लिखी जाने वाली पहली किताब प्रकाशित की। जिसमें काराफूतो आइनू की कहानी बताई गई थी। 1916 में एक आइनू द्वारा लिखित आइनू जीवन और संस्कृति के बारे में पहली पुस्तक की रचना हुई।

काईहिशा (1926) जैसे आइनू संगठन स्थापित किये गये, जो *सुईहिशा* (1922) बुराकू संगठन से प्रभावित थे। अन्य संगठनों का गठन किया गया और कई पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई जैसे कि 'द लाइट ऑफ इजो; (ईजो नो हिकारि) इस पत्रिका के केवल चार अंक बचे हैं, लेकिन ये बताते हैं कि उनका कार्यक्रम सामाजिक सुधार और शिक्षा के प्रोत्साहन करने का और देशी संरक्षण कानून का विरोध करने का था।

इन संघर्षों का सामना होने से 1937 में पितृसत्तात्मक संरक्षण कानूनों को संशोधित किया गया था और नीतियों ने अब न केवल आइनू को खेतीहर बनने के लिए सब्सिडी प्रदान

करना शुरू किया बल्कि अन्य व्यवसायों को अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया। एक आइनू कवि और बुद्धिजीवी ने 1970 में लिखा कि, ''आइनू देशवासी हैं जो अन्य देशवासियों से असमान है'' *(कोकुमिन नामी दे वा नई कोकुमिन)*।

1899 के होकाइड़ो पूर्व मूल निवासी संरक्षण अधिनियम का आधार यह था कि 'पूर्व मूल निवासी' 'समान शाही प्रजा' थे फिर भी 'श्रेष्ठतम की उत्तरजीविता (survival of the fitest) के सिद्धांत के अनुसार, वे अपने जीवन जीने की क्षमता खो चुके थे। इसलिए उन्हें संरक्षित किया जाना चाहिए। यह योजना वास्तव में उस योजना के समान थी जिसने कहा कि वे 'जापानी नागरिक' हैं लेकिन 'समान' नहीं हैं। इसलिए उन्हें कल्याण के माध्यम से सामाजिक रूप से उन्नत किया जाना चाहिए।

7.9.4 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आइनू की स्थिति

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में इन विचारों पर सवाल उठाए गए और आइनू की जब्त की गई भूमियों की वापसी के लिए समूह संगठित किये गये। उन्होंने आइनू शब्द के इस्तेमाल पर सवाल उठाना शुरू किया और इसे अपनी पहचान के लिए अपमान के रूप में देखना शुरू कर दिया, इसकी बजाय उन्होंने उतारी या साथी शब्द का उपयोग किया। यह 6 जून, 2008 तक नहीं हुआ कि जापानी डाइट ने एक द्वि-दलीय, गैर-बाध्यकारी प्रस्ताव को मंजूरी दी जिसमें जापान के उतारी देशी लोगों को 'एक विशिष्ट भाषा, धर्म और संस्कृति के साथ देशी लोगों' के रूप में मान्यता दी और भेदभाव को समाप्त करने का आग्रह किया। सरकार ने नोट किया : 'सरकार ऐतिहासिक रूप से इस तथ्य को स्वीकार करना चाहेगी कि अनेक आइनू लोगों के साथ जापानी लोगों के साथ कानूनी रूप से बराबर होने के बावजूद भेदभाव किया गया था और आधुनिकीकरण की प्रगति के साथ वे गरीबी में धकेले गए।'

7.10 रयूक्यू द्वीप से ओकिनावा के प्रांत को

ओकिनावा के द्वीपों को मूल रूप से रयूक्यू द्वीप कहा जाता था। उनकी भाषा और संस्कृति पर गहरा चीनी प्रभाव था और वह जापान की मुख्य भूमि से अलग था। ऐतिहासिक रूप से उन्होंने चीन और जापान दोनों की प्रभुसत्ता को स्वीकार किया था। सत्सुमा जागीर ने 1609 में द्वीपों पर आक्रमण किया और 1611 तक उन्हें हड़प लिया लेकिन रयूक्यू चीन की एक मातहत जागीर भी बना रहा। मेजी पुनर्स्थापना के बाद उन्हें एक हान बना दिया गया लेकिन वह जापान के अधीन ही रहा। 1879 में जब जापान ने यह घोषणा की कि वह उसे कब्ज़े में लेगा तो चीन ने उसका विरोध किया लेकिन जापान ने आगे बढ़कर उसे ओकिनावा प्रांत में परिवर्तित कर दिया। ओकिनावा के राजा शो ताई (1843-1901) को टोकियो में निर्वासित किया गया था।

ओकिनावा के लोग शत्रुतापूर्ण थे क्योंकि जापानियों ने उनकी भाषा और संस्कृति की जगह जापानी भाषा का इस्तेमाल थोपना शुरू कर दिया था। जापान ने एक सार्वजनिक शिक्षा की प्रणाली स्थापित की और जापानी को ही स्कूल में पढ़ाया जाता था जैसा आइनू के साथ किया गया था। स्थानीय भाषा का प्रयोग निषिद्ध था और छात्रों को इसका उपयोग करने के लिए शर्मिंदा किया जाता था। धीरे-धीरे जापानी भाषा बोलने वाले लोगों का एक वर्ग बनाया गया लेकिन तनाव बना रहा।

ओकिनावा जापान का एकमात्र हिस्सा था जहाँ एक प्रमुख लड़ाई लड़ी गई थी। अप्रैल-जून 1945 में ओकिनावा की लड़ाई जिसमें एक लाख से अधिक नागरिक मारे गये थे। बहुत-

से लोग गुफाओं में छिप गये और अमेरिकी सैनिकों द्वारा पकड़े जाने से भयभीत होकर उन्होंने सामूहिक आत्महत्याएँ की। वे सरकार के प्रचार से इतने आश्वस्त थे कि आत्मसमर्पण करना शाही ध्येय के प्रति एक देशद्रोही होना था। कुछ विद्वानों का तर्क है कि लड़ाई की भयंकरता और ओकिनावा लोगों द्वारा बिना मदद के भी इतनी दृढ़ता से प्रतिरोध करना अमेरिका को परमाणु बम को प्रयोग करने का कारण बना क्योंकि उन्होंने सोचा कि जापानी प्रतिरोध में भारी संख्या में लोग हताहत होंगे।

बोध प्रश्न 2

1) संक्षेप में चर्चा करें कि आइनू लोगों ने जापानी संस्कृति में आत्मसात् होने का कैसे विरोध किया?

....

....

....

....

....

....

2) जापान के सांस्कृतिक जीवन पर अराजकतावाद के प्रभाव का मूल्यांकन *सुईहिशा* संगठन के संदर्भ में कीजिए।

....

....

....

....

....

....

7.11 सारांश

इस इकाई में हमने कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों पर ध्यान दिया है जिन्होंने जापान की समस्याओं की जाँच-पड़ताल की थी और उनके लिए कई प्रकार के विकल्पों की पेशकश की थी। हमने सामूहिक रूप से वंचित समूह, जिसे *हिसाबेस्तु बुराकू* के नाम से जाना जाता था और उनके संगठन जिसे *सुईहिशा* के नाम से जाना गया उनकी भी चर्चा की। हमने जापान के दो परिधीय क्षेत्रों होक्काइड़ो के उत्तरी द्वीप और इसके निवासी आइनू और ओकिनावा के द्वीपों को दिखाने के लिए चर्चा की कि राष्ट्र निर्माण एक विवादास्पद प्रक्रिया थी और ये समूह अलग-अलग धारणाएँ रखते थे कि जापानी होने का क्या मतलब होता है।

यह अलग-अलग स्वर बहुत से स्वरों में कुछ उदाहरण हैं जिन्होंने आधुनिक जापान को बनाने में मदद की। प्रत्येक ने अपने तरीकों से सार्वजनिक बहस के क्षेत्र को व्यापक बनाने में योगदान दिया और सामाजिक भेदभाव और आर्थिक असमानता को खत्म करने और नागरिक समाज को मज़बूत करने में योगदान दिया।

7.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 7.2 और उपभाग 7.2.1 देखें

2) भाग 7.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 7.9 और उपभाग 7.9.1 देखें।

2) भाग 7.6 और 7.8 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY